# शैतान के साथ क्या करें, क्या न करें (4:15-31)

अभी तक हमने चार सुझाव देखे थे कि यदि शैतान हमें नष्ट करने का यत्न करे तो हमें क्या करना चाहिए: (1) अचम्भित न हों, (2) हिम्मत न हारें, (3) शैतान के हाथों की कठपुतली न बनें और (4) अपने बारे में भूल जाएं। कलीसिया के लिए प्रथम चार सुझावों को बताने के बाद, हम अपने हवाले में से पांच और सुझाव निकालना चाहते हैं।

## शैतान से ईमानदारी की उम्मीद न रखें (4:15-17)

पतरस द्वारा सफाई दिए जाने के बाद सभा मौन और स्तब्ध रह गई थी। अन्त में परेशान करने वाली खामोशी तब टूटी जब किसी के सुझाव पर उन्होंने गुप्त बैठक की। "परन्तु उन्हें सभा के बाहर[1] जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे" (आयत 15)।[2]

उन्होंने इस विषय पर विचार किया *होगा* कि वे मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के भीषण पाप से कैसे छूट सकते थे। जैसे पतरस के श्रोताओं ने आरम्भ में पूछा था, उन्हें भी वही प्रश्न पूछना *चाहिए* था, कि "हम क्या करें?" (2:37)। तथापि, यह गलती करने में उनका निहित स्वार्थ था। यदि वे मान लेते कि यीशु ही मसीह था, तो शीघ्र ही उनके स्थान पर कोई नया महायाजक और सभा बन जाते उनके अधिकार छिन जाते, वे शक्तिहीन हो जाते! वे घमण्ड, पूर्वधारणा, और व्यावहारिकता की बाधा को हटा नहीं सके। बजाय यह पूछने के कि वे अपनी उस भयंकर गलती को कैसे सुधार सकते थे, उन्होंने यह पूछा, कि "हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें?" (आयत 16क)।

बन्द दरवाज़ों के पीछे, वे खुल कर बोल सकते थे: "क्योंकि यरूशलेम के सब रहने वालों पर प्रगट है, कि इन (पतरस और यूहन्ना) के द्वारा एक प्रसिद्ध चिह्न दिखाया गया है; *और हम उससे इन्कार नहीं कर सकते*" (आयत 16ख)। आज के तथाकथित आश्चर्यकर्मों के विपरीत, नये नियम में लिखित आश्चर्यकर्म तत्काल, पूरी तरह से होते थे और यहां तक कि नास्तिक भी उन्हें नकार नहीं सकते थे![3]

सभा के लोग *जानते* थे कि वह आदमी चंगा हुआ था; इसलिए वे *जानते* थे कि पतरस और यूहन्ना की गवाही सच्ची थी; इसलिए, उन्हें *मालूम* था कि यीशु मुर्दों में से जी उठा था! फिर भी, उनका यही प्रश्न था, कि "हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें?" और उन्हें केवल इस बात की चिन्ता थी कि मसीहियत को फैलने से कैसे रोका जाए (आयत 17क)। यहां पर उनका कपट नज़र आ रहा था! "अब वे एक दूसरे की तरफ किस मुंह से देखते होंगे,

यह एक नैतिक पहेली है। शायद वे नहीं देख पाए।''

ध्यान दें कि एक ''प्रसिद्ध'' चिह्न भी कठोर मनों को बदल नहीं सका। आज, कुछ लोग कहते हैं कि पाप-के रोगी संसार के पास जाने ''आश्चर्यकर्म'' होने चाहिए। तथापि, आश्चर्यकर्म कभी भी ''उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ'' नहीं हुए; वह सामर्थ *सुसमाचार* ही है (रोमियों 1:16)! हमें ''और आश्चर्यकर्म'' नहीं सुसमाचार के और प्रचार की आवश्यकता है!

हमें नहीं मालूम कि इन निर्दोष लोगों के बारे में असमंजस में पड़ी सभा ने कितनी देर तक विचार-विमर्श किया। अन्त में, किसी ने सुझाव दिया कि: ''हम उन्हें धमकाएं, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें'' (आयत 17ख)। यद्यपि पतरस और यूहन्ना बड़ी दृढ़ता से बोले थे, फिर भी यहूदी अगुवे उन्हें और अन्य प्रेरितों को धमकाने की सोच रहे थे। आखिर, कुछ समय पहले की ही तो बात थी, जब यीशु को गिरफ़्तार किया गया था, तो यही प्रेरित भय के मारे भागे नहीं थे? उन्होंने उन्हें यह कहकर चेतावनी देने का फैसला किया कि यीशु के नाम से ''फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।''

एक पल के लिए उन शब्दों पर विचार कीजिए: ''फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।'' सभा पतरस और यूहन्ना को यह आदेश देना चाहती थी कि ''यीशु के नाम से फिर *कुछ भी* न बोलें और न सिखाएं'' (आयत 18)। वे सार्वजनिक और एकांत स्थानों में यीशु के नाम के उल्लेख पर भी *पूर्ण प्रतिबन्ध* लगाना चाहते थे। उनकी योजना यीशु के नाम से कहीं भी, किसी भी तरह, किसी भी समय और किसी भी स्थान पर बोलने की पाबन्दी लगाने की थी! यदि प्रेरितों और अन्य मसीहियों ने इस आदेश को मान लिया होता, तो यीशु का नाम धरती पर दोबारा कभी किसी को सुनाई न देता!

हो सकता है कि हम विरोध करने के लिए तैयार हों, ''ज़रा रुकिए! सभा के पास इस तरह की असंगत मांगें करने का कोई अधिकार नहीं था! पतरस और यूहन्ना ने किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया था और वे किसी दण्ड के अधिकारी भी नहीं थे। उनकी योजना निष्कपट नहीं थी!'' किसने कहा कि शैतान ईमानदार है? वर्षों से, मैंने पाया है कि धूर्त लोगों के साथ पेश आते समय मसीही लोग उलझन में पड़ जाते हैं और निराश हो जाते हैं। मैंने ये मनोभाव सुने हैं, ''मुझे यह (उसकी) बात समझ नहीं आती!'' जब मैं ये शब्द सुनता हूं, तो मैं अक्सर यह उत्तर देता हूं, ''मुझे प्रसन्नता है कि आप इसे *नहीं* समझते। इससे प्रकट होता है कि *आपका* मन धूर्त नहीं है!''[4]

जब शैतान आपको मुश्किल में डाल देता है, और वह ईमानदारी के साथ नहीं खेलता तो अचम्भित न हों। यही उसका स्वभाव है। उससे धूर्तपन की ही *उ मीद* रखें। सावधान रहें कि कहीं आप उसके उदाहरण का अनुसरण न करें! (याद रखें: उसके हाथों की कठपुतली न बनें!)

## शैतान को रत्तीभर[5] भी जगह न दें (4:18-22)

सभा ने पतरस और यूहन्ना को सभागृहों में फिर बुलाया। ''तब उन्हें बुलाया और

चतौनी देकर यह कहा, कि यीशु के नाम से कुछ ज़ी न बोलना और न सिखलाना'' (आयत 18)। हालात की गज़्भीरता को कम करके मत आंकें। देश की सबसे बड़ी अदालत ने अपना निर्णय दे दिया था। इस्राएल की सबसे शक्तिशाली कानून बनाने वाली संस्था ने नियम बना दिया था: यीशु के नाम से बोलना या शिक्षा देना अब अवैध था!

ध्यान दें कि सभा ने इकट्ठे होने पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई थी। गाने और प्रार्थना करने को उन्होंने अवैध करार नहीं दिया था। भलाई के काम करने को उन्होंने अवैध करार नहीं दिया था। उन्होंने केवल यीशु के नाम पर बोलने और शिक्षा देने को अवैध करार दिया था। शैतान को भय केवल सुसमाचार से है! उसे हमारे इकट्ठा होने, क्लासों और आराधना के लिए परिवारों के इकट्ठा होने पर कोई आपत्ति नहीं है। जब हम परोपकार के काम करके किसी की सहायता करते हैं तो उसे कोई परेशानी नहीं होती (जब तक हम मसीह के नाम पर बल नहीं देते)।[6] दूसरी ओर जब हम ''सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर'' (लूका 14:23), लोगों को मसीह की ओर आने का न्यौता देते हैं, तो इससे उसे घबराहट होती है! उसे मालूम है कि क्रूस उसकी तबाही है (प्रकाशितवाक्य 12:11)! दुर्भाग्य से, प्रेरितों को तो यह आज्ञा देनी पड़ी थी कि यीशु के नाम से ''*न* बोलना और न सिखलाना,'' परन्तु, हम में से कइयों को इस आज्ञा की आवश्यकता है कि यीशु के नाम से *बोलें* और सिखलाएं।

मैं फिर पूछता हूं, यदि प्रेरित सभा की आज्ञा का पालन करते तो? कलीसिया के इतिहास में ये क्षण कितने नाज़ुक थे! वर्षा होने के बाद कभी आप ने गीली लकड़ियों को जलाने का यत्न किया है? आप थोड़ी सी आग लगाते हो। थोड़ा-थोड़ा घास और छोटी-छोटी सूखी लकड़ियां डालते हुए आप फूंकें मारते रहते हो जब तक कि आग जल नहीं जाती। यदि आपको इसका अनुभव है, तो आप जानते होंगे कि आग जलाने के लिए कितनी कोशिश करनी पड़ती है। हवा का एक झोंका और अत्यधिक गीली लकड़ियां अगर उस पर पड़ जाएं, तो वे उस छोटी सी चिंगारी को मुश्किलों में डाल कर उसे बुझा सकते हैं। जिस समय पतरस और यूहन्ना महासभा के बाहर खड़े थे, कलीसिया भी इस टिमटिमाती चिंगारी की तरह ही नाज़ुक स्थिति में थी।[7] यदि उस आदेश का पालन कर लिया गया होता, तो आज संसार में कलीसिया का इतिहास कितना भिन्न होता![8]

पतरस और यूहन्ना शैतान को रत्तीभर भी जगह न देने को दृढ़ संकल्प थे! यदि मुझे इस प्रकार का आदेश मिला होता, चाहे मैंने उस का पालन न करने की योजना पहले से ही बना रखी होती, तो मैं अपने संकल्पों के बारे में अपना मुंह बन्द रखना ही अच्छा समझता, परन्तु प्रेरितों ने ऐसा नहीं किया। खामोशी को स्वीकृति माना जाता, ''परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया कि 'तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम *परमेश्वर* की बात से बढ़कर *तु हारी* बात मानें' '' (आयत 19)।

वस्तुत: प्रेरितों ने कहा, ''आपको देश के न्यायाधीश माना जाता है, इसलिए यह न्याय करने में आप को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए: हम आपकी बात मानें या हमें परमेश्वर की बात माननी चाहिए?'' उनके प्रश्न ने सभा को दुविधा में डाल दिया।[9] देश के धार्मिक प्रतिनिधि होने के नाते, वे जानते थे कि उनका उत्तर होना *चाहिए,* कि ''परमेश्वर की आज्ञा

मानने को किसी भी और बात से वरीयता दी जानी चाहिए''; परन्तु क्योंकि लोगों को तो शक्ति और ओहदे की चिन्ता थी और वे ऐसा उत्तर देकर जिससे प्रेरितों को लाभ मिले, अपने आप को परेशानी में नहीं डालना चाहते थे।

सभा के उत्तर की परवाह किए बिना, पतरस और यूहन्ना अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए वचनबद्ध थे। ''क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता'' उनका कहना था, ''कि जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें'' (आयत 20)! जो कुछ किसी ने ''देखा और सुना'' हो उसे बताना तो गवाह होने की मुज़्य परिभाषा है! यीशु ने उनको अपने गवाह होने का कार्यभार सौंपा था (1:8); उनके पास कोई और विकल्प नहीं था! प्रेरितों को यीशु का प्रचार करने से मना करना तो सूर्य को उदय न होने, पक्षियों को न चहचहाने, और माताओं को अपने बच्चों से प्यार न करने की आज्ञा देने के समान है!

मैं और आप यीशु के साथ गलील और यहूदिया की पगडण्डियों में नहीं घूमे थे, परन्तु हमने मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में उसके साथ समय बिताया है। जीवन के मार्ग पर चलने में वह हमें सामर्थ देता है। प्रेरितों की तरह ही, हमें भी कहना चाहिए, ''हम तो औरों को यीशु के बारे में *अवश्य* बताएंगे, हम सुसमाचार को *बताने और इसकी शिक्षा देने से हट नहीं सकते*।''

''तब उन्होंने उनको और[10] धमकाकर छोड़ दिया ... '' (आयत 21क)। ये केवल खाली धमकियां तो नहीं थीं। थोड़ी देर के बाद, प्रेरितों को गिरज़्तार करके पीटा जाना था (5:17-40)। उसके शीघ्र बाद, स्तिफनुस को मार दिया जाना था (6:8-7:60)।

> ... उनको ... छोड़ दिया क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दांव नहीं मिला,[11] इसलिए कि जो घटना हुई थी इसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे; क्योंकि वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का चिह्न दिखाया गया था, चालीस वर्ष से अधिक आयु का था[12] (आयतें 21ख, 22)।

लोगों की नज़रों में, ये दो प्रेरित परमेश्वर के विशेष सेवक थे, सो सभा ने उन्हें कुछ भी करने का साहस नहीं किया।[13]

## अपनी सामर्थ के स्रोतों के निकट ही रहें (4:23-27)

23 से 31 आयतों में, हमें प्रेरितों की सामर्थ के स्रोत का पता चलता है। आज हम अधिकतर वैतनिक प्रचारकों और अन्य कर्मियों, चर्च की इमारतों और कार्यक्रमों, मसीही यूनिवर्सिटियों और कॉलेजों की स्थापना करने पर निर्भर हैं।[14] आरज़्भिक कलीसिया के पास इन साधनों में से एक भी नहीं था। मसीहियों के पास क्या था? उनके एक दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ सज़्बन्ध मज़बूत थे!

जब सभा ने पतरस और यूहन्ना को जाने दिया तो प्रेरितों ने सबसे पहले मसीह में अपने भाइयों को ढूंढा। ''वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ महायाजकों

और पुरनियों ने उन से कहा था, उनको सुना दिया''(आयत 23)। मूल भाषा में केवल ''उनके अपने'' हैं; अलग-अलग अनुवादकों ने कई शब्द दिए हैं। मेरा मानना है कि पतरस और यूहन्ना जिनके पास गए, वे अन्य *प्रेरित* ही थे: (1) यहां तक, हमने केवल प्रेरितों की शिक्षा और प्रचार की बात ही पढ़ी है, इस कारण सभा की चेतावनियां सीधे उन्हीं को थीं। (2) प्रार्थना करने वालों ने बोलने के लिए हियाव और शक्ति मांगी (4:29, 30), जो कि (अभी तक) प्रेरितों के पास ही थी। (3) जब वह स्थान हिल गया, तो वहां प्रार्थना करने वाले पवित्र आत्मा से भर गए थे (4:31); उसके तुरन्त बाद हम देखते हैं कि प्रेरितों को सामर्थ मिली (4:33; 5:12ख)। सभा ने अपने आदेश का उल्लंघन करने के कारण जिन लोगों को गिरफ़्तार किया था (5:28), वे प्रेरित ही थे (5:18)।

वाक्यांश ''अपने साथियों'' किसी के लिए भी कहा गया हो, वे पतरस और यूहन्ना के अपने थे कि जब शैतान ने उन्हें परेशानी में डाल दिया तो वे उनके पास जा सके। जैसे यीशु को दोस्तों की आवश्यकता थी वैसे ही प्रेरितों को भी थी, और हम में से हर एक को भी है। यह भी एक कारण है कि परमेश्वर ने कलीसिया को बनाया। परमेश्वर की इच्छा थी कि हम समर्पित लोगों की संगति से सामर्थ पाएं। यदि आप शैतान के आक्रमणों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहते हैं तो मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ सम्बन्धों को मज़बूत रखें!

किसी को घमण्ड हो सकता है, ''मुझे किसी की ज़रूरत नहीं, मैं सब कुछ अपने आप कर सकता हूं!'' यदि आपको अपने भाइयों और बहनों की आवश्यकता नहीं है तो इस बात की डींग मत मारें। इसका अर्थ तो यह हुआ कि जो जीवन आप जी रहे हैं, उसमें आगे बढ़ने के लिए उत्साह पाने की आपको आवश्यकता नहीं! यदि प्रभु के लिए आप के मन में जोश हो और शैतान आपको इतनी मुश्किल में डाल दे, जैसे उसने पतरस और यूहन्ना को डाला तो आपको अपने साथी मसीहियों की खोज में निकलना चाहिए!

पतरस और यूहन्ना को सामर्थ एक और स्रोत से भी मिली थी, जैसा कि हम आयत 24 में पढ़ते हैं। यदि प्रेरित हमारे जैसे लोग होते, तो आयत 24 का आरम्भ ऐसे होता, ''यह सुनकर, वे बहुत परेशान हुए और कहने लगे 'हमें पता था कि सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था!' '' अथवा ''सुनकर, वे बहुत क्रोधित हुए और कहा, वे हमारे साथ ऐसा नहीं कर सकते, और सभागृह की ओर भागे!'' अथवा ''यह सुनकर, उन्होंने सत्ता पर बैठे लोगों को उतारने के लिए एक अभियान चलाया!'' परन्तु, लिखा है कि, ''यह सुनकर, उन्होंने एक चित्त होकर[15] ऊंचे शब्द से[16] परमेश्वर से कहा ... '' (आयत 24क)। प्रेरितों ने अपनी शक्ति के उत्तम स्रोत से परमेश्वर को पुकारा।

ऐसे अवसरों की तैयारी के लिए जिनमें शैतान हमें मुश्किल में डालता है, हमारा गहरा सम्बन्ध न केवल अपने भाइयों, बल्कि परमेश्वर के साथ भी होना आवश्यक है! ''प्रार्थना अपने दायित्व से बचने के लिए नहीं है; यह तो परमेश्वर की *योग्यता* पर हमारा भरोसा *दिखाने के लिए* है।''

24 से 30 आयतों में, प्रेरितों के काम में दूसरी लिखित प्रार्थना मिलती है। इससे पूर्व

की प्रार्थना (यहूदा के स्थान पर नियुक्ति के बारे) में इस बात पर बल दिया गया कि परमेश्वर ''मनों का जानने वाला'' है (1:24)। इस प्रार्थना में परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने पर बल दिया गया है।[17] इसका आरम्भ इस प्रकार हुआ, ''हे स्वामी, तू वही है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है,[18] बनाया'' (आयत 24ख)। यहां यूनानी शब्द का अनुवाद ''स्वामी'' सामान्य शब्द ''प्रभु'' (*कुरियोस*) नहीं बल्कि ''निष्ठुर शासक'' (*डिस्पोटस*) है, जिसके पास सम्पूर्ण शक्ति है![19] इस कारण कई अनुवादों में ''सर्वशक्तिमान प्रभु'' है। हिन्दी बाइबल के नये नियम के नये अनुवाद में ''हे अन्तर्यामी प्रभु'' है। उन्होंने प्रार्थना उस सर्वशक्तिमान के आगे की जिसने सब कुछ बनाया (जिसमें वह महासभा भी आती थी) और जिसका सब चीज़ों पर अधिकार है!

अगली चार आयतों में प्रेरितों के साथ घटने वाली इस विशेष घटना पर परमेश्वर का नियन्त्रण बताया गया है। पहले, पवित्र शास्त्र की ओर ध्यान दिलाया गया:[20]

> ''तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद[21] के मुख से कहा, कि अन्यजातियों ने हुल्लड़[22] क्यों मचाया? और देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? प्रभु और उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए'' (आयतें 25, 26)।[23]

प्रेरित केवल अपने भाइयों और परमेश्वर के निकट ही नहीं रहे; वे पवित्र शास्त्र के भी निकट रहे! वे पुराने नियम में से इस आयत को *पढ़* नहीं सके (सामान्यत: लोगों के पास पवित्र शास्त्र की प्रतियां नहीं होती थीं); उन्होंने इसे *याद किया* हुआ था। यदि आप शैतान के आक्रमण सहने के लिए तैयार रहना चाहते हैं, तो आपकी शक्ति का एक और स्रोत परमेश्वर का वचन भी है! इसे पढ़िए; इसका अध्ययन कीजिए और इसे स्मरण रखिए!

राजसी भजनों में से पहले भजन संहिता 2 का हवाला लिया गया था।[24] ये शब्द गड़बड़ी के उस समय के लिए थे जो सामान्यत: मध्यकाल के राजाओं के बीच पाई जाती थी। आसपास के देशों ने इसे उन पर हमला करने का अवसर जाना।[25] भजन संहिता के लिखने वाले ने घोषणा की कि ''प्रभु और उसके मसीह के विरोध में''[26] उनके सारे प्रयास ''व्यर्थ'' साबित होंगे। मूल में, ''उसका मसीह (अभिषिक्त)'' इस्राएल के राजा के लिए प्रयोग किया गया (1 शमूएल 26:9), परन्तु किसी भी सांसारिक राजा ने भजन संहिता में ''अभिषिक्त'' के सम्बन्ध में सभी बातों को पूरा नहीं किया। इस कारण यहूदी लोग ठीक ही समझते थे कि भजन संहिता 2 के शब्द आने वाले मसीह के लिए ही थे।

भजन संहिता 2 पूरी तरह से यीशु पर होने वाली बातों का पूर्वसंकेत था: ''क्योंकि सचमुच तेरे सेवक[27] यीशु के विरोध में, जिसे तू ने अभिषेक किया[28] हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर यरूशलेम में इकट्ठे हुए'' (आयत 27)। दाऊद ने कहा था कि उस अभिषिक्त के विरोध में चार गुट इकट्ठे होंगे: राजा, हाकिम, अन्यजाति, और लोग। हेरोदेस राजा, पीलातुस हाकिम, अन्यजातियों (रोमी सिपाहियों) और इस्राएल के लोगों के इन चारों गुटों ने यीशु के विरुद्ध एड़ी-चोटी

का ज़ोर लगा दिया।[29]

## परमेश्वर में आस्था रखें (4:28-30)

प्रार्थना के अन्तिम भाग में, प्रेरितों ने परमेश्वर में अपनी आस्था पर बल दिया। उन्हें विश्वास था कि सब कुछ परमेश्वर के नियन्त्रण में था। आयत 28 में बताया गया है कि चार गुट इसलिए इकट्ठे हुए "कि जो कुछ पहले से *तेरे* हाथ और *तेरी* मति से ठहरा था वही करें।" प्रत्येक घटना परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों का भाग थी! ("ऐसा नहीं कि परमेश्वर ने उनसे काम ज़बरदस्ती करवाया हो, बल्कि उसने उद्धार के अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनकी स्वेच्छा से उनको प्रयोग करना चाहा।") अन्य शब्दों में, यरूशलेम में शक्तिशाली अगुओं की ओर से जो सताव आरम्भ हुआ, उससे यह प्रमाणित नहीं होता था कि परमेश्वर का स्थिति पर नियन्त्रण नहीं रहा बल्कि, वहां जो कुछ भी हुआ, उससे यही प्रमाणित हुआ कि हर बात में परमेश्वर का नियन्त्रण था![30] जब शैतान हमें मुश्किल में डाल दे, जब हमें यह लगे कि हमारे जीवनों में सब कुछ नियन्त्रण से बाहर होता जा रहा है तो यह याद रखना आवश्यक है कि हम उसकी आराधना करते हैं, जिसका *सब कुछ पर* नियन्त्रण है और जो बुराई से भी भलाई निकाल सकता है (रोमियों 8:28)!

आयत 29 और 30 में, हमें प्रेरितों की याचिकाएं मिलती हैं। जब मैं प्रार्थना के इस भाग पर पहुंचा, तो मैंने रुक कर मनन किया: "यह जानते हुए कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और सब कुछ उसके नियन्त्रण में है, यदि मैं इन मनुष्यों के स्थान पर होता तो मैं क्या मांगता?"[31] मैं प्रभु से यह मांगता कि जो-जो मसीह के शत्रु हैं, उन्हें सज़ा दी जाए। मैं यह भी मांग सकता था कि वह अत्याचार को रुकवा दे। कम से कम, मैं यह तो निश्चित ही मांगता कि यदि अत्याचार जारी रहता है तो वह उसमें हमारी रक्षा करे। प्रेरितों ने इनमें से कुछ ज़ी नहीं मांगा, बल्कि उन्होंने बिनती की:

> अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों[32] को देख; और अपने दासों[33] को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े, हियाव से सुनाएं। और चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा; कि चिह्न और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएं (आयतें 29, 30)।

सभा के बारे में, उन्होंने इतना ही कहा कि "हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख।" अन्य शब्दों में, "हे प्रभु, यह बात हम तेरे हाथों में दे रहे हैं, जो कुछ इन लोगों ने किया है उसकी ओर ध्यान दे और अपनी इच्छा के अनुसार इस स्थिति को ठीक कर।"

जब शैतान हमें मुश्किल में डाल दे, तो हमें बदला लेने या क्रोध की भावना को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए। पौलुस ने लिखा, "सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए" (इफिसियों 4:31)। उसने फिर, लिखा:

> हे प्रियो, अपना पलटा न लेना; परन्तु (परमेश्वर के) क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, ''पलटा लेना मेरा काम है'' प्रभु कहता है ''मैं ही बदला दूंगा।''''परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; … '' बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो (रोमियों 12:19–21)।

यदि आप को बहुत गहरा घाव लगा है, तो प्रभु से कहें कि वह उसे ''देखे'' कि क्या हुआ है। फिर सब कुछ उसके हाथों में छोड़ दें, और अपने जीवन में चलते रहें!

प्रेरितों को इसकी परवाह नहीं थी कि सभा ने उनके साथ क्या किया या वह सभा उनके साथ क्या कर सकती थी बल्कि उन्हें यह चिन्ता थी कि वे चुनौती का सामना कर पाएं। उन्होंने उस कष्ट से बचाव नहीं चाहा, परन्तु सेवा के लिए सामर्थ मांगी। उन्होंने प्रभु से सहायता मांगी कि वे घबरा न जाएं। सब से बढ़कर, उन्होंने उसका वचन दिलेरी से सुनाने और उसकी इच्छा को सामर्थ के साथ पूरा करने की चाह की!

## विश्वास रखें कि परमेश्वर आपको आवश्यकतानुसार सामर्थ देगा (4:31)

उन्हें अपनी प्रार्थना का उत्तर इतनी जल्दी मिला, जिसकी उन्होंने कल्पना नहीं की थी! ''जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे,[34] हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे'' (आयत 31)। यह ''एक और पिन्तेकुस्त'' नहीं था।[35] बल्कि परमेश्वर ने स्पष्ट रूप में दिखा दिया था कि वह उनके साथ था। यही दिखाने के लिए उसने बाद में जेल को भी हिलाना था (प्रेरितों 16)। ''आत्मा से परिपूर्ण'' का अर्थ सम्भवत: वही है जैसा कि आयत 8 में है।[36] आयत 8 में, ''पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर'' सभा से बात की। अब ''वे *सब* (प्रेरित) पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए [जैसे पतरस हुआ था], और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे [जैसे पतरस ने सुनाया था, आयत 13]।'' सभा ने दो पुरुषों को यीशु का नाम न सुनाने की चेतावनी दी थी। दो पुरुषों को चुप कराने की जगह, उनकी धमकियों से *बारह* पुरुष बड़े साहस के साथ यीशु के नाम से चंगा करते ने और प्रचार करने लगे, ''और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रजु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे … '' (4:33); ''और प्रेरितों के हाथों से बहुत से चिह्न और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे'' (5:12)!

हमारे साथ यीशु ने वही वायदे नहीं किए, जो उसने प्रेरितों के साथ किए थे। जिस इमारत में हम हैं, परमेश्वर उसे भौतिक रूप से नहीं हिलाएगा और न ही वह हमें आत्मा की प्रेरणा से बोलने के योग्य बनाएगा। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि परमेश्वर ने हमें शक्तिहीन छोड़ दिया है। उसने हमारे साथ रहने का वायदा किया है (इब्रानियों 13:5ख, 6)। उसने हमारी सहायता के लिए हमें अपना आत्मा दिया है। वह हमें सामर्थ देता है, ''जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20)। जब हम रास्ते में मुश्किलों से घिरे होते हैं, तो वह उनमें से निकलने का रास्ता भी देता है, ताकि हम इसे सह सकें (1 कुरिन्थियों

10:13)। हो सकता है कि आज वह गिरजाघर को न हिलाए, परन्तु वह कलीसिया को हिला सकता है![37] इस तरह, हम भी वचन को दृढ़ता से बोल सकते हैं!

## सारांश

शैतान ने प्रेरितों को खामोश करने का यत्न किया, परन्तु वह नाकाम रहा। शैतान हर प्रकार के यत्न कर रहा है जिससे वह हमें भी खामोश कर सके। तथापि, यदि हम अपने इस पाठ में दिए गए सुझावों को मानें और परमेश्वर के निकट रहें, तो शैतान को हमसे भी निराशा ही हाथ लगेगी! ''इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा'' (याकूब 4:7)।

निस्संदेह, शैतान इतनी आसानी से हार नहीं मानता। अध्याय 5 में हम देखेंगे कि शैतान पुन: कलीसिया को नाश करने का यत्न करता है – अन्दर और बाहर से। उसी प्रकार, शैतान आप को भी आसानी से नहीं छोड़ेगा। याकूब 4:7 को फिर से देखें: यदि ''शैतान का साम्हना'' करना है तो आपको *पहले* ''परमेश्वर के अधीन'' होना होगा। आप अपने दम पर शैतान का सामना नहीं कर सकते; आपको परमेश्वर की मदद की ज़रूरत है! यदि आपने अपना जीवन प्रभु के अधीन नहीं किया, तो अभी कर दें!

---

पादटिप्पणियां

[1]यूनानी में यहां शब्द ''सन्हेद्रिन'' के लिए है, और NIV इसका यही अनुवाद करता है। पद में सभा *कक्षों* की बात कही लगती है। [2]टीकाकार आश्चर्यचकित हैं कि लूका ने इस बन्द कमरे की बातचीत को कैसे जान लिया। कुछ अनुमान लगाते हैं कि या तो पौलुस या गमलीएल (पौलुस का गुरु) या वे दोनों वहां उपस्थित रहे होंगे और लूका को पौलुस से पता चल गया होगा कि वहां क्या हुआ। अन्य टिप्पणी करते हैं कि बाद में परिवर्तित होने वाले याजकों (6:7) या फरीसियों में से कुछ (15:5) वहां उपस्थित होंगे। परन्तु, यह मन में रखने पर कि पौलुस को *पवित्र आत्मा* की अगुआई थी, सारी अड़चनें दूर हो जाती हैं। परमेश्वर को मालूम है कि बन्द दरवाज़ों के पीछे क्या होता है! [3]भिखारी की चंगाई का उदाहरण इन तीन विशेषताओं को चित्रित करता है: परन्तु – 3:7; पूरी तरह चंगाई – 4:10; मानने के लिए मजबूर करने वाली – 4:16. [4]टेढ़े लोग दूसरों को भी टेढ़ा ही देखना चाहते हैं। [5]''शैतान को रत्तीज़र भी जगह न दें,'' का अर्थ है ''शैतान की छोटी सी बात भी न मानें।'' इस विचार को आप अपने क्षेत्र के हिसाब से भी प्रस्तुत कर सकते हैं। [6]समय बीतने के साथ, मण्डलियां अपनी सेवा अधिक से अधिक और सुसमाचार प्रचार कम से कम करने वाली बन जाती हैं। इससे शैतान के उद्देश्य बड़ी आसानी से पूरे हो जाते हैं। बहुत सी मण्डलियों के काम से तो वह कदापि चिन्तित नहीं होता! [7]आप एक छोटे बालक में उदाहरण का प्रयोग कर सकते हैं। ये घटनाएं कलीसिया के शैशवकाल में घटीं। [8]मेरे एक क्लास से पूछने पर कि, ''यदि उस आदेश को मान लिया गया होता तो क्या होता?'' एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''सम्भवत: हम आज इन बातों का अध्ययन करने के लिए यहां न बैठे होते!'' [9]जब वे यीशु को फंसाने का यत्न करते तो यीशु उनको असमंजस में डाल देता था। मसीह के जीवन से इसी प्रकार की परिस्थिति के लिए, देखिए मत्ती 21:24–27. [10]कइयों ने अनुमान लगाया है कि हो सकता है पहले अपराध के लिए केवल चेतावनी देना ही सभा की नीति हो। तथापि, शास्त्र यह स्पष्ट कर देता है, कि यदि ऐसा करने का ज़रा सा भी बहाना मिल जाता और यदि लोगों का डर न होता तो सभा प्रेरितों को दण्ड देने

में बिल्कुल न हिचकिचाती।

[11]उन्होंने पतरस और यूहन्ना को धमकाने की कोशिश की, परन्तु सफल नहीं हुए थे। उलटा, वे लोगों के कारण स्वयं ही डर गए। [12]उस व्यक्ति की आयु पर बल दिया गया क्योंकि (1) वह इतने लम्बे समय से भीख मांगता था कि हर कोई उसे जानता था, (2) वह उस उम्र को लांघ चुका था जिसमें वह प्राकृतिक रूप से चंगा हो सकता, (3) इससे बिना किसी संदेह के यह प्रमाणित हो गया कि यह वास्तव में एक आश्चर्यकर्म था। [13]फिर, हो सकता है कि सभा प्रेरितों की सामर्थ के बारे में कुछ घबराई हो! [14]आवश्यक नहीं कि इन में से कोई भी गलत हो–यदि हम उन्हें विचार में रखें। [15]''एकचित्त होकर'' वाक्यांश प्रेरितों की पुस्तक में लगभग एक दर्जन बार आया है। आरम्भिक कलीसिया की *एकता* उनकी सफलता के ''रहस्य का'' एक भाग था! [16]यद्यपि शास्त्र कहता है कि ''*उन्होंने* ... ऊंचे शब्द से ... कहा,'' एक व्यक्ति के द्वारा सभी की भावनाओं को बताने का सामान्य ढंग अपनाया होगा, जिसमें सभी मिलकर अपनी ओर से ''आमीन'' मिला देते हैं। [17]प्रार्थनाएं एक औपचारिकता न होकर एक प्रत्युत्तर होनी चाहिए। अपनी प्रार्थनाओं में बार–बार उन्हीं वाक्यांशों का प्रयोग करने में सावधानी बरतें। आपकी प्रार्थनाएं अवसर के अनुकूल हों। [18]''जो कुछ'' में मनुष्य शामिल है। मनुष्य को परमेश्वर ने रचा; मनुष्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं से विकसित नहीं हुआ। [19]जैसे अब है, उस समय भी शब्द ''निरंकुश शासक'' का अर्थ अच्छा नहीं माना जाता था और इस कारण इसे परमेश्वर के लिए कभी इस्तेमाल नहीं किया जाता था। परन्तु, इस विशेष मामले में, असाधारण ढंग से मज़बूत होने के कारण यह शब्द अधिक उपयुक्त था। [20]यहां पर प्रार्थना में पवित्र शास्त्र का हवाला देने का उदाहरण है परन्तु इसकी अति मत करें। प्रार्थना संदेश देने का माध्यम नहीं है।

[21]आत्मा की प्रेरणा के लिए यहां एक और महत्वपूर्ण हवाला है। ध्यान दें कि यह हमें बताता है कि भजन संहिता 2 अध्याय किस ने लिखा। [22]अनुवादित शब्द ''हुल्लड़'' का प्रयोग एक जोशीले घोड़े की हिनहिनाहट के लिए किया जाता था जिसे, विरोधों के बावजूद आखिरकार, लगाम के अनुशासन में समर्पण करना ही पड़ता था। [23]अधिकतर टीकाकार टिप्पणी करते हैं कि मूल यूनानी में आयत 25 के शब्द उलझाने वाले हैं परन्तु इसका अर्थ काफ़ी स्पष्ट है। [24]''राजसी भजन'' कुछ विशेष भजनों का नाम रखने का एक ढंग है जो इस्राएल के सिंहासन से सम्बन्धित हैं। यहूदियों द्वारा इनमें से अधिकतर का इस्तेमाल एक नये राजा के अभिषेक के समय किया जाता था। [25]फलस्तीनियों ने देश पर तब आक्रमण किया जब दाऊद को पूरे इस्राएल पर राजा बनाया गया था। [26]भजन लिखने वाले ने यह घोषणा की कि परमेश्वर के अभिषिक्त पर किसी प्रकार का आक्रमण वास्तव में स्वयं परमेश्वर पर हमला था और जो कोई भी परमेश्वर को चुनौती दे, उसे असफलता ही हाथ लगेगी। प्रेरितों ने भी यह महसूस किया कि उन पर किसी प्रकार का हमला वास्तव में यीशु पर हमला था और उसमें भी हमला करने वाले को असफलता ही हाथ लगनी थी! [27]प्रेरितों में 3:13 में उपयुक्त शब्द ''सेवक'' पर टिप्पणियां देखें। [28]यीशु का अभिषेक इस्राएल के राजाओं की तरह तेल के साथ नहीं किया गया था। बल्कि, बपतिस्मे के समय उसका अभिषेक पवित्र आत्मा से किया गया था (मत्ती 3:16, 17; प्रेरितों 10:37, 38)। [29]पुराने नियम में इस्राएल के आस पास रहने वाली मूर्तिपूजक जातियों के लिए ''लोगों'' शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। प्रेरितों ने ''लोगों'' शब्द इस्राएल पर लागू किया! [30]प्रेरितों 2:23 पर टिप्पणियां देखिए।

[31]यदि आप यह सामग्री कक्षा के लिए इस्तेमाल करते हैं, तो आप क्लास के सदस्यों से पूछ सकते हैं कि उन्होंने किसके लिए प्रार्थना की। [32]ऐसी ही प्रार्थना के लिए, ध्यान दें 2 राजाओं 19:14–19; यशायाह 37:17. ''लिख लें और उसी के अनुसार काम करें'' का नियम लागू होता है। [33]उन्होंने दाऊद और यीशु को ''सेवक'' कहा (आयत 25, 27, 30) परन्तु स्वयं को ''गुलाम'' या ''दास''। [34]कई लोगों ने अनुमान लगाया है कि ''वह स्थान'' 1:13 की वह ''अटारी'' ही होगा, परन्तु, तब से वे उसके पास से गुज़र रहे थे, इसलिए यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि वे अभी भी उसी कमरे में मिलते हों। यह मन्दिर में सुलेमान के ओसारे में या उसके निकट कोई कक्ष हो सकता है (5:12)। हमें वास्तव में यह पता नहीं है कि यह कहां था। [35]जैसे पहले भी टिप्पणी की गई थी, कि प्रेरितों 2 का पिन्तेकुस्त एक ही बार होने वाली घटना थी। [36]''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' होने का सरल अर्थ है कि

''पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में।'' यदि वहां उपस्थित समूह में प्रेरितों के अतिरिक्त और लोग थे, तो वाक्यांश सम्भवत: इफिसियों 5:18 के गैर चमत्कारी अर्थ में प्रयुक्त होता है: अपनी इच्छा को पवित्र आत्मा के आगे सौंप कर उसे अपने जीवन पर नियन्त्रण करने की अनुमति (जैसे नये नियम में प्रकट किया गया है)। जब हम आत्मा के नियन्त्रण में समर्पित होते हैं, तो वह हमारे जीवनों को भरपूर कर देता है और आत्मा का फल उपजता है (गलतियों 5:22, 23)। इस घटना में आत्मा की उपस्थिति का प्रदर्शन यह था कि *उन्होंने* बड़े साहस से वचन सुनाया। अन्य शब्दों में, शास्त्र साधारण रूप से मसीहियों के लिए भी हो सकता है केवल प्रेरितों के लिए ही नहीं। तथापि, मेरा विश्वास है कि पतरस ने अपने साथी प्रेरितों को ढूंढा कि प्रार्थना करने वाले वे ही थे, कि वे ही हैं जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, और यह कि *वे* दृढ़ता से वचन सुनाने लगे। अब तक, लूका ने केवल यही दर्ज किया था कि सताव में पतरस और यूहन्ना हियाव के साथ बोले। अब उसने लिखा कि *सभी* प्रेरितों ने वैसा ही किया। [37]अर्थात, वह कलीसिया के सदस्यों को हिला सकता है।